प्रातःक्लास ओमशांति रुहानी समाचार 13.10.67

ओमशांति। रुहानी बच्चों प्रति बाप समझाते हैं। यह तो बच्चे समझते हैं रुहानी बच्चे माना आत्माएं। रुहानी बाप माना आत्माओं का बाप। इसको कहा जाता है आत्माओं और परमात्मा का मिलन। यह मिलन होता ही है एक बार। यह सब बातें तुम जानते हो। जैसे बैरिस्टरी पढ़ते हैं तो पढ़ने वाले और टीचर के साथ समझ न सके। यह फिर है विचित्र बात। विचित्र बाप विचित्र आत्माओं को समझाते हैं। वास्तव में आत्मा विचित्र है। यहां आय चित्र बनती है। चित्र से पार्ट बजाती है। आत्मा तो सबमें है ना। जनावरों में भी आत्मा तो है ना। 84लाखा कहते हैं उसमें तो सब जनावर आ जाते हैं। ढेर जनावर आदि हैं। बाप समझाते हैं इन बातों में जाना टाइम वेस्ट करना है। सिवाय इस ज्ञान के मनुष्यों का टाइम वेस्ट ही होता है। इस समय बाप बैठ तुम आत्माओं को पढ़ाते हैं। फिर आधा कल्प तुम प्रालब्ध भोगते हो। वहां तुमको कोई तकलीफ नहीं होती। तुम्हारा टाइम वेस्ट होता ही है दुःख सहन करने में। यहां तो दुःख ही दुःख है। इसलिए सभी बाप को याद करते हैं कि हमारा दुःख में टाइम वेस्ट होता है, इनसे निकालो। सुख में कब टाइम वेस्ट नहीं कहेंगे। यह भी तुम समझते हो। इस समय मनुष्य की कोई वैल्यु नहीं है। मनुष्य देखो अचानक ही मरते कैसे हैं। एक ही तूफान में कितने मर जाते हैं। रावणराज्य में मनुष्य की कोई वैल्यु नहीं रहती। अब बाप तुम्हारा कितनी वैल्यु बनाते हैं। बर्थ नॉट अपेनी से फिर बर्थ पाउंड बनाते हैं। गाया भी जाता है हीरे जैसा जन्म अमोलक..... ..इस समय मनुष्य कौड़ियों पिछाड़ी लगे हुए हैं। क्या कमाते हैं, करके लखपति, करोड़पति,पदमपति बनते हैं। उन्हों की सारी बुद्धि उसमें ही रहती है। उनको कहते हैं यह सब भूल बाप को याद करो। मानेंगे नहीं। बुद्धि (में) बैठेगा उनको जिनको आधा कल्प पहले भी बैठा होगा। नहीं तो कितना भी समझाओ कभी बुद्धि में बैठेगा नहीं। तुम भी नम्बरवार जानते हो कि यह दुनियां बदल रही है। बाहर में भी तुम यह लिख दो कि दुनियां बदल रही है। फिर भी समझेंगे नहीं जब तक तुम किसको समझाओ। अच्छा ,कोई ..... फिर उनको समझाना पड़े बाप को याद करो। सतोप्रधान बनो। नालेज तो बहुत सहज है। यह सूर्यवंशी–चंद्रवंशी फिर है वैश्यवंशी,शूद्रवंशी। अभी दुनियां बदल रही है। बदलाने वाला एक ही बाप है। यह भी तुम यथार्थ रीति जानते हो। सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। माया पुरुषार्थ करने नहीं देती। फिर समझते है। ड्रामा अनुसार ही इतना पुरुषार्थ नहीं चलता है। अभी तुम बच्चे जानते हो हम श्रीमत से अपने लिए इस दुनियां को बदलाय रहे हैं। श्रीमत है ही शिवबाबा की। शिवबाबा2 कहना तो बहुत सहज है। और कोई न शिवबाबा को, न वर्सा को जानते हैं। बाबा माना ही वर्सा। बाबा भी सच्चा चाहिए ना। आजकल तो म्यून्सिपालिटी के बड़े को भी बाबा कह देते हैं। गांधी को भी भारत का फादर कहते थे। वास्तव में यह भी तो रांग है ना। यह कोई जगदगुरू कहते हैं। अब जगत माना सारी सृष्टि के गुरू। वह कोई मनुष्य हो कैसे सकता है?जबकि पतित–पावन सर्व का सदगतिदाता एक ही बाप है। बाप तो है निराकार। फिर कैसे लिबरेट करते हैं। दुनियां बदलती है। जरूर एक्ट में आवेंगे तब तो पता पड़ेगा ना। ऐसे नहीं कि प्रलय हो जाती है। फिर बाप नये सिरे रचते हैं। शास्त्रों मे दिखाया है एक बड़ी प्रलय होती है, दूसरी छोटी प्रलय होती है। फिर पीपल के पत्ते पर कृष्ण आता है ;परंतु बाप समझाते हैं ऐसे तो है नहीं। गाया भी जाता है वर्ल्ड रिपीट। तो प्रलय हो न सके। तुम्हारी दिल में है अभी यह पुरानी दुनियां बदल रही है। ऐसे तो नहीं कहेंगे नई दुनियां बदल पुरानी हो रही है। नहीं। पुरानी दुनियां बदल नई हो रही है। यह सब बातें बाप ही समझाते हैं। यह (ल.ना.) हैं नई दुनियां के मालिक। तुम चित्रों में भी दिखाते हो पुरानी दुनियां का मालिक है रावण। रामराज्य और (रावणराज्य) गाया जाता है। यह बातें तुम्हारी बुद्धि में हैं। बाबा यह पुरानी दुनियां बदलाय रहे हैं। आसुरी दुनियां खतम हो अब दैवी दुनियां की स्थापना हो रही है। बाप कहते हैं मैं जो हूं ,जैसा हूं कोई विरला ही समझते हैं। कैसे दुनियां बदल रही है वह भी तुम नम्बरवार पुरुषार्थ

अनुसार जानते हो। जो अच्छी रीति पुरुषार्थ करते हैं उनको बड़ा अच्छा नशा रहता है। याद की पुरुषार्थ को रियल नशा चढ़ेगा। 84 के चक्र का नालेज समझाने में इतना नशा नहीं चढ़ता है जितना बाप की याद की यात्रा में चढ़ता है। मूल बात है भी पावन बनने की। पुकारते भी हैं आकर पतित से पावन बनाओ। ऐसे नहीं कहते हैं आकर विश्व की बादशाही दो। भक्तिमार्ग में कितनी कथायें सुनते हैं। सच्ची2 सत्यनारायण की कथ तो यह है। वह कथायें जन्म जन्मांतर सुनते2 नीचे ही उतरते आये हैं। भारत में ही यह कथायें सुनने का रिवाज़ है। और कोई खंडों में कथायें सुनने का रिवाज़ नहीं है। भारत को ही रिलीजियस मानते हैं। ढेर के ढेर मंदिर हैं भारत में। क्रिश्चियन्स को तो एक ही क्राइस्ट की चर्च होगी। यहां तो ढेर मंदिर हैं। रियल मंदिर तो वास्तव में एक ही शिव का होना चाहिए। नाम भी एक होना चाहिए। यहां तो ढेर नाम हैं। विलायत वाले भी आते हैं मंदिर देखनो। बिचारों को यह पता नहीं है कि भारत का प्राचीन क्या था। 5000वर्ष से पुरानी चीज़ तो कोई है नहीं। वह तो समझते हैं लाखों वर्ष की पुरानी चीज मिले। बाप समझाते यह मंदिर आदि बनी होगी,चित्र बने होंगे। इसको 2500वर्ष हुए होंगे। पहले2 शिव की ही पूजा होती है। वह है अव्यभिचारी पूजा। वैसे ही अव्यभिचारी ज्ञान भी कहा जाता है। पहले होती है अव्यभिचारी पूजा। फिर होती है व्यभिचारी पूजा। उसमें ज्ञान की कोई बात नहीं। पहले एक शिव की पूजा करते हैं। फिर होती है देवताओं की। अब तो देखो पानी की ,मिट्टी की, सबकी पूजा होती है। अब बेहद का बाप कहते हैं तुमने भक्तिमार्ग (में) कितना धन गंवाया है। कितनी अथाह शास्त्र है। अथाह चित्र हैं। गीतायें कितनी ढेर के ढेर होंगी। इन सब पर खर्चा करते2 सन्यासियों को देते2 ,माथा टेकते तुम क्या बन गये हो। कल तुमको डबल सिरताज बनाया था। फिर तुम कितने कंगाल बन गये हो। कल की बात है ना। कल तुमको राज्य दिया था। तुम भी समझते हो बरोबर हमने 84का चक्र ऐसे लगाया है। 84जन्म और 84लाख में देखो कितना फर्क है। कितना बड़ा गपोड़ा है। अब तुम जानते हो हम फिर से (देवता) बन रहे हैं। बाबा से वर्सा ले रहे हैं। बाबा घड़ी2 ताकीद करते हैं। गीता में भी यह अक्षर है मनमनाभव। कोई2 अक्षर ठीक है। बाकी तो हैं गपोड़े। प्रायः कहा जाता है ना याने देवी देवता धर्म है नहीं। बाकी चित्र हैं। अब देवी देवता धर्म का शास्त्र भी जरूर चाहिए। चित्रों की खयाल से ही गीता बैठ बनाई है। यह भी ड्रामा में नूंध है। फिर भी यही सामग्री बनेगी। सतयुग में यह कुछ भी नहीं होता। तुम्हारा यादगार देखो कैसा बना है। तुम समझते हो अभी हम स्थापन कर रहे हैं। फिर भक्तिमार्ग में हमारी ही यादगार एक्युरेट बनेगी। अर्थक्वेक आदि होती है उसमें सब खतम हो जाता है। वहां तुम सब कुछ नया बनावेंगे। हुनर तो वहां रहता ना। हीरे काटने का भी हुनर है। यहां भी हीरों को काटते हैं फिर बनाते हैं। पहले पत्थर तुम देखो तो बिल्कुल समझ न सको। इसमें बड़ी एक्सपर्ट होते हैं। वह फिर वहां जावेंगे। वहां यह सब हुनर जावेगा। तुम समझते हो कितना सुख होगा। इनका(ल.ना.) राज्य था। नाम ही है स्वर्ग। 100परसेंट सालवेंट। अब तो है इनसालवेंट। भारत में जवाहरात की बहुत फैशन है, जो परम्परा चला आता है। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। तुम जानते हो यह दुनियां बदल रही है। अब स्वर्ग बन रहा है। इसके लिए हमको पवित्र जरूर बनना पड़े। दैवी गुण भी धारण करनी है। इसलिए बाबा कहते हैं चार्ट रखो। हम आत्मा ने कोई आसुरी एक्ट तो नहीं किया। अपने को आत्मा पक्का समझो। शरीर द्वारा कोई विकर्म तो नहीं किया। अगर किया तो रजिस्टर खराब हो जावेगा। यह है 21जन्मों की लाटरी। यह भी रेस है। जैसे घोड़े दौड़ होती है ना। इसको कहते हैं राजस्व अश्वमेध.....स्वराज्य के लिए अश्व यानी तुम आत्माओं को दौड़ी पहननी है। अब वापस घर जाना है। इसको स्वीट साइलेंस होम कहा जाता है। यह अक्षर अभी तुम सुनते हो। अब बाप कहते हैं बच्चे खूब मेहनत करो। राजाई मिलती है। कम बात थोड़े ही है। मैं आत्मा हूं। इतने जन्म लिए हैं अब बाप कहते हैं

हैं तुम्हारे 84जन्म पूरे हुए हैं। अब फिर पहले नम्बर से शुरू करना है। नये महलों में जरूर बच्चे ही बैठेंगे। ऐसे तो नहीं खुद पुराने में बैठे और नये में किराये वालों को बैठावेंगे। तुम जितनी मेहनत करेंगे नई दुनियां के मालिक बनेंगे। नया मकान बनता है तो फिर दिल होती है पुरानी को छोड़ नये में बैठेंगे। बाप बच्चों के लिए नया मकान बनाते ही तब हैं जब पहला मकान पुराना होता है। यहां किराया पर देने की तो बात ही नहीं। जैसे वह लोग मून आदि में प्लाट लेने की कोशिश करते रहते हैं। तुम फिर स्वर्ग में प्लाट ले रहे हो। जितना2 ज्ञान और योग में रहेंगे उतना पवित्र बनेंगे। यह है राजयोग। कितनी बड़ी राजाई मिलेगी। बाकी यह जो मून आदि में प्लाट ढूंढते हैं वह सब है अति .....। यही चीजें जो सुख देने वाली हैं वही फिर विनाश करने, दुःख देने वाले बन जावेंगे। आगे चलकर लश्कर आदि भी कम हो जावेगी। बम से फटाफट काम होता जावेगा। अभी तो उन्हों को काम में नहीं लगावे तो खिलाना भी पड़े ना। यह ड्रामा बना हुआ है। समय पर अचानक विनाश हो जाता है। फिर सिपाही आदि भी मर जाते हैं। मजा है देखने का। तुम अब फरिश्ते बन रहे हो। तुम जानते हो हमारी खातिर विनाश होना ही है। ड्रामा में पार्ट है। पुरानी दुनियां खलास हो जाती है। जो जैसा कर्म करते हैं वैसा जन्म लेते हैं ना। अब समझो सन्यासी अच्छे हैं, जन्म तो फिर भी गृहस्थियां पास लेंगे ना। श्रेष्ठ जन्म तो तुमको नई दुनियां में मिलना है। फिर भी संस्कारों अनुसार जाये वह बनेंगे। तुम अभी संस्कार ले जाते हो नई दुनियां के लिए। जन्म जरूर भारत में ही लेंगे। जो बहुत अच्छे रिलीजियस माइंडेड होंगे उन पास जन्म लेंगे ;क्योंकि तुम कर्म ही ऐसे करते हो। जैसा2 संस्कार उस अनुसार ही जन्म होता है। तुम बहुत उंच कुल में जाय जन्म लेंगे। तुम्हारे जैसा अच्छा कर्म करने वाला कोई तो होगा नहीं। जैसी पढ़ाई ,जैसी सर्विस वैसा जन्म। मरना तो बहुतों को है ना। पहले रिसीव करने लिए भी जाना है। बाप समझाते हैं अब यह दुनियां बदल रही है। जो समझते हैं उन्हों को जास्ती .....में नहीं जाना चाहिए। बाप ने तो सा. कराया है। बाप अपना भी मिसाल बताते हैं। देखा 21जन्मों लिए राजाई मिलती है। इसके आगे यह 10/20लाख क्या है?अल्फ को मिले बादशाही। बे को मिले गधाई। भागीदार को गधाई दे दो। तुम 21जन्म लिए राजाई ले लो। भागीदार को कह दिया जो चाहिए सो लो। बोला यह–यह चाहिए। पता नहीं नुकसान पड़े तो। अच्छा एक वर्ष का नफा भी ले लो। झट लिखा–पढ़ी कर ली। कोई भी नुकसान न हुई। बच्चों को भी समझाया जाता है बाबा से तुम क्या लेते हो?स्वर्ग की बादशाही। जितना हो सके सेंटर खोलते जाओ। बहुतों का कल्याण करो। तुम्हारी 21जन्मों की कमाई हो रही है। यहां तो लखपति ,करोड़पति बहुत हैं। वह सब हैं बेगर्स। तुम्हारे पास आवेंगे भी बहुत। प्रदर्शनी में कितने आते हैं। ऐसे मत समझो प्रजा नहीं बनती है। बहुत प्रजा बनती है। अच्छा2 तो बहुत कहते हैं ;परंतु कहते हमको फुर्सत नहीं। थोड़ा भी सुना तो प्रजा में आ जावेगा। अविनाशी ज्ञान का विनाश होता नहीं। बाप का परिचय देना कम बात थोड़े ही है। कोई2 के रोमांच खड़े हो जावेंगे। थोड़ा भी सुना तो प्रजा में आ जावेगा। अगर उंच बनना हो तो पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगे। फिर टू लेट हो जावेंगे। बाप कोई से धन आदि तो लेंगे नहीं। मकान न लेवें मिट्टी में मिल जायेंगे तो फिर मुझे रिटर्न में वहां देना पड़े। मैं सौदागर भी पक्का हूं। बच्चों को फुरी2 तालाब होना है ना। कोई2 तो एक रुपया भी भेज देते हैं। बाबा एक ईंट लगाय दो। सुदामा का चावन मुट्ठी का गायन है ना। बाप कहते हैं तुम्हारे यह हीरे–जवाहर हैं। हीरे जैसा जन्म तो सभी का बनता है ना। तुम भविष्य के लिए बनाय रहे हो। तुम जानते हो यहां इन आंखों से जो कुछ देखते हैं यह पुरानी दुनियां, यह बदल रही है। अलाउद्दीन का भी खेल है ना ;परंतु अर्थ समझते थोड़े ही हैं। तुम जानते हो बाबा वह स्थापन कर रहे हैं। वहां तो अथाह सुख ही सुख मिलेगा। यहां है अथाह दुःख। यहां बीमारियां कितनी हैं। तुम अभी पुरी के मालिक बन रहे हो। मोहजीत जरूर बनना पड़े। अच्छा, बच्चों को गुडमार्निंग। ओम।